



Arushi

13 Sep 1994

08:40 PM

Jammu

Model: Baby-Horoscope

Order No: 121564201

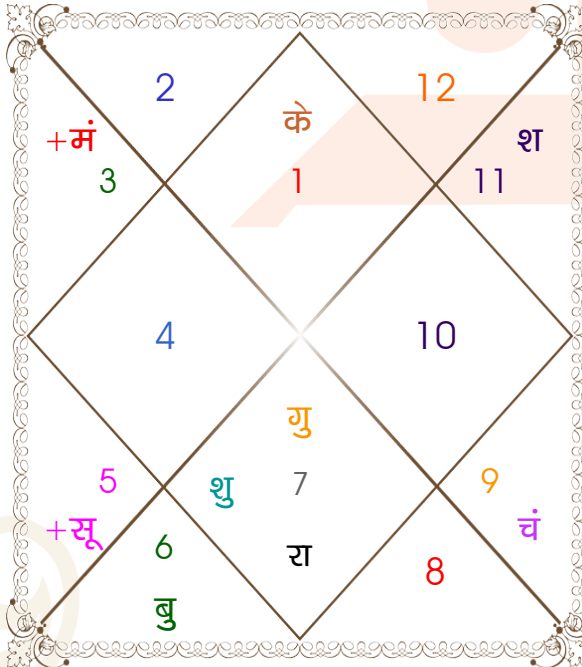
तिथि 13/09/1994 समय 20:40:00 वार मंगलवार स्थान Jammu चित्रपक्षीय अयनांश : 23:47:12
अक्षांश 32:42:00 उत्तर रेखांश 74:52:00 पूर्व मध्य रेखांश 82:30:00 पूर्व स्थानिक संस्कार -00:30:32 घंटे

पंचांग	अवकहड़ा चक्र
साम्पातिक काल : 19:38:59 घं	गण _____: राक्षस
वेलान्तर _____: 00:03:55 घं	योनि _____: श्वान
सूर्योदय _____: 06:12:37 घं	नाड़ी _____: आद्य
सूर्यास्त _____: 18:39:58 घं	वर्ण _____: क्षत्रिय
चैत्रादि संवत _____: 2051	वश्य _____: मानव
शक संवत _____: 1916	वर्ग _____: मूषक
मास _____: भाद्रपद	चुंजा _____: अन्त्य
पक्ष _____: शुक्ल	हंसक _____: अग्नि
तिथि _____: 9	जन्म नामाक्षर _____: भी-भीमा
नक्षत्र _____: मूल	पाया(रा.-न.) _____: रजत-ताम्र
योग _____: आयुष्मान	होरा _____: मंगल
करण _____: कौलव	चौघड़िया _____: लाभ

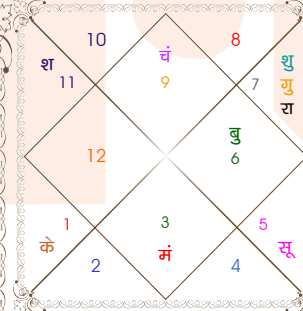
विंशोत्तरी	योगिनी
केतु 0वर्ष 10मा 23दि	उल्का 0वर्ष 9मा 6दि
चन्द्र	उल्का
06/08/2021	21/06/2025
07/08/2031	21/06/2031
चन्द्र 07/06/2022	उल्का 21/06/2026
मंगल 06/01/2023	सिद्धा 21/08/2027
राहु 07/07/2024	संकटा 20/12/2028
गुरु 06/11/2025	मंगला 19/02/2029
शनि 07/06/2027	पिंगला 21/06/2029
बुध 05/11/2028	धान्या 20/12/2029
केतु 06/06/2029	भामरी 21/08/2030
शुक्र 05/02/2031	भद्रिका 21/06/2031
सूर्य 07/08/2031	

ग्रह	व अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न		12:08:01	मेष	अश्विनी	4	केतु	बुध	---	0:00			
सूर्य		26:48:52	सिंह	उ०फाल्गुनी	1	सूर्य	सूर्य	स्वराशि	1.26	आत्मा	पितृ	विपत
चंद्र		11:37:32	धनु	मूल	4	केतु	बुध	सम राशि	1.13	ज्ञाति	मातृ	जन्म
मंगल		23:50:17	मिथु	पुनर्वसु	2	गुरु	शनि	शत्रु राशि	1.40	अमात्य	भ्रातृ	वध
बुध		20:01:37	कन्या	हस्त	4	चंद्र	केतु	स्वराशि	0.97	भ्रातृ	ज्ञाति	क्षेम
गुरु		18:04:36	तुला	स्वाति	4	राहु	सूर्य	शत्रु राशि	0.84	मातृ	धन	साधक
शुक्र		10:58:11	तुला	स्वाति	2	राहु	शनि	मूलत्रिकोण	0.96	कलत्र	कलत्र	साधक
शनि	व	14:19:28	कुंभ	शतभिषा	3	राहु	बुध	मूलत्रिकोण	1.35	पुत्र	आयु	साधक
राहु	व	22:43:34	तुला	विशाखा	1	गुरु	शनि	मित्र राशि	---	ज्ञान		वध
केतु	व	22:43:34	मेष	भरणी	3	शुक्र	शनि	मित्र राशि	---	मोक्ष		सम्पत

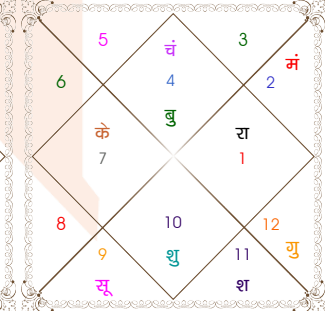
लग्न-चलित



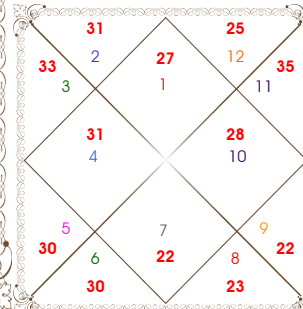
चन्द्र कुंडली



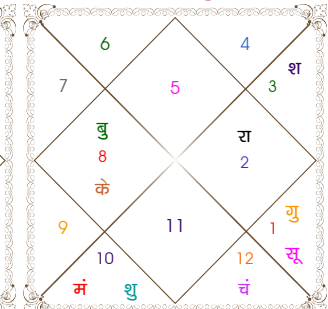
नवमांश कुंडली



सर्वाष्टकवर्ग



दशमांश कुंडली



ShriSidhesavarii jyotishhe kendra

Panjabi colony shamgarh dist mandasaur M. P. 458883

9669569563

ramchranvyass5gmail.com

नक्षत्रफल

आप मूल नक्षत्र के चतुर्थ चरण में उत्पन्न हुए हैं। अतः आपकी जन्म राशि धनु तथा राशि स्वामी वृहस्पति होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ण क्षत्रिय, नाड़ी आद्य, योनि श्वान, गण राक्षस, वर्ग मूषक होगा। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का आद्याक्षर "भि" या "भी" से प्रारम्भ होगा जैसे- भीम सिंह ।

आप गण्डमूल नक्षत्र में पैदा हुए हैं। इस नक्षत्र के चतुर्थ चरण में उत्पन्न जातक को विशेष अरिष्ट नहीं होता फिर भी सावधानी वश मूल नक्षत्र की शास्त्रीय विधि विधान से किसी योग्य विद्वान के द्वारा जन्म समय में शान्ति करा लेनी चाहिए। इसके लिए नक्षत्र के कम से कम 28000 जप करने चाहिए तथा 27 दिन बाद जब यह नक्षत्र पुनः आवे तो जपे हुए मंत्रों के दशांश का हवन कराना चाहिए। इस प्रकार विधि पूर्वक शान्ति करने से इसके समस्त दोष नष्ट हो जाते हैं तथा जातक सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करता है।

**मंत्र - ॐ अपाधमयः किल्बिषमपकृत्यामपोरय अपामार्गत्वमस्मदपटुः दुः
मानसागरी**

सुखों की जीवन में प्राप्ति करने में आप एक भाग्यवान पुरुष सिद्ध होंगे तथा समस्त सांसारिक सुखों का प्रसन्नतापूर्वक अपने जीवन में उपभोग करेंगे। साथ ही एक धनाढ्य पुरुष के रूप में समाज में प्रसिद्ध भी रहेंगे। इसके अतिरिक्त वाहन सुख भी आप प्राप्त करेंगे। शारीरिक बल का आप में अभाव नहीं रहेगा तथा पूर्ण रूप से शक्तिशाली रहेंगे। आप स्थिर कर्म करने के लिए अधिक प्रयत्नशील रहेंगे तथा कार्य में अस्थिरता या चंचलता आपको पसन्द नहीं आएगी। आपके शत्रु आपसे हमेशा पराजित तथा भयभीत रहेंगे। अतः कोई भी आपका विरोध करने में समर्थ नहीं होगा। विविध प्रकार के शास्त्रों का आप ज्ञानार्जन भी करेंगे तथा समाज में एक विद्वान के रूप में आदरणीय समझे जाएंगे।

**सुखेनयुक्तो धनवाहनाद्यो हिंसे बलाढ्यः स्थिरकर्मकर्ता ।
प्रतापितारतिजनो मनुष्यो मूलेकृती स्याज्जननं प्रपन्नः ॥
जातकाभरण एवं मानसागरी**

अर्थात् मूल नक्षत्रोत्पन्न जातक सुख से युक्त, धनाढ्य, वाहन से सुसम्पन्न, हिंसक, बलवान, स्थिरकार्य करने वाला, शत्रु हन्ता और विद्वान होता है।

आप अपने सम्भाषण में अत्यन्त दक्षता का परिचय देंगे जिससे सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। आपका स्वभाव अभिमान के भाव से भी युक्त रहेगा तथा यदा कदा आप इसका प्रदर्शन भी अन्य जनों के समक्ष करते रहेंगे। आपकी अधिकांश बातें बिना प्रमाण के कही जाएंगी। अतः लोग उनको अप्रमाणित समझकर उन पर शीघ्र ही विश्वास करने से लिए तैयार नहीं होंगे।

ShriSidhesavarii jyottishe kendra

Panjabi colony shamgarh dist mandasaur M. P. 458883

9669569563

ramchranvyass5gmail.com

**मूलर्क्षे पटुवाग्विधूर्तकुशलो धूर्तः कृतघ्नो धनी ।
जातकपरिजातः**

अर्थात् मूल नक्षत्र में उत्पन्न जातक चतुरवाणी से युक्त, अप्रामाणिक, धूर्त, कृतघ्न तथा धनी होता है।

आप जीवन में सर्वदा धनैश्वर्य तथा मान सम्मान से युक्त रहेंगे तथा समाज के सभी वर्गों में आपकी लोकप्रियता व्याप्त रहेगी। आपकी कार्य करने की प्रवृत्ति स्थिरता से युक्त रहेगी। फलतः किसी भी कार्य को दृढता पूर्वक करने में आप सक्षम रहेंगे। इसके अतिरिक्त स्थिर ऐश्वर्य एवं सम्पत्ति का भी आप जीवन में प्रसन्नतापूर्वक उपभोग करके आनन्दमय जीवन व्यतीत करेंगे।

**मूले मानी धनवान्सुखी न हिंसः स्थिरो भोगी ।
बृहज्जातकम्**

अर्थात् मूल नक्षत्र में उत्पन्न जातक साहसी, धन और मान से सम्पन्न, स्थिर विचारों तथा ऐश्वर्य का उपभोग करने वाला होता है।

रजत पाद में उत्पन्न होने के कारण आप जीवन में स्त्री एवं पुत्रोंसहित धन धान्य से सर्वदा सम्पूर्ण रहेंगे। पुराणादि शास्त्रों के श्रवण करने में भी आपकी पूर्ण निष्ठा रहेंगी। आपके सभी कार्य पुण्य के लिए समर्पित होंगे तथा तीर्थ यात्राओं के प्रति भी आपकी श्रद्धा तथा रुचि रहेगी। जीवन में आप समस्त भौतिक संसाधनों एवं ऐश्वर्य से सुसम्पन्न रहेंगे तथा सुखपूर्वक इसका उपभोग भी करेंगे। साथ ही काव्य शास्त्र में भी आपकी रुचि रहेगी एवं इसके अध्ययन में भी आप तत्पर रहेंगे। आप बहुमूल्य रत्नों एवं धातुओं से भी सुशोभित रहेंगे। आप के सभी कार्य प्रारम्भिक अवस्था में ही सिद्ध हो जाएंगे। बन्धुजनों से आपके मधुर एवं स्नेह पूर्ण संबंध रहेंगे एवं उनसे आपको पूर्ण सहयोग प्राप्त होता रहेगा। आपका भाग्य भी उत्तम रहेगा एवं अनुकूल समय पर उदय होगा। धार्मिक तथा पितृ आदि कार्यों के प्रति भी आप निष्ठावान रहेंगे। आप एक बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा सद्गुणों से सम्पन्न पुत्रों से सर्वदा युक्त रहेंगे। इस प्रकार आपका जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होगा।

धनु राशि में उत्पन्न होने के कारण आपका मुख तथा कण्ठ भाग दीर्घ रहेगा तथा कान, आँठ एवं दान्त स्थूलता से युक्त रहेंगे। भुजाएं मजबूत तथा मांसल रहेगी। आपको पर्याप्त मात्रा में पैतृक धन की प्राप्ति होगी अतः जीवन में सुखपूर्वक आप इसका उपभोग करेंगे। आप में दानशीलता की भावना भी विद्यमान रहेगी तथा अवसरानुकूल यथा शक्ति आप जरूरत मन्द लोगों को दान देकर अपनी इस प्रवृत्ति का पालन करेंगे। आपकी लेखन कार्य में भी रुचि रहेगी। अतः काव्य सृजन में आपको सफलता प्राप्त हो सकती हैं। आप का शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा फलतः शारीरिक बल का अभाव नहीं रहेगा जिससे अन्य लोग आपसे प्रभावित भी रहेंगे। आप भाषण देने में अत्यन्त ही निपुण होंगे तथा अपने प्रभाव पूर्ण भाषणों से लोगों में आपके प्रति सम्मान

का भाव जागृत करेंगे। चित्रकारी के प्रति भी आप रुचिशील रहेंगे एवं इसमें विशेष योग्यता प्राप्त करने में समर्थ हो सकेंगे। आपकी प्रवृत्ति में गम्भीरता का गुण विद्यमान रहेगा तथा धर्म में भी आपका विश्वास रहेगा फलतः इसके विषय में अच्छा ज्ञान भी रखेंगे। बन्धुवर्ग से आप औपचारिक संबंध ही रख सकेंगे। साथ ही आप स्नेह एवं समान व्यवहार से ही वश में किए जा सकेंगे।

**व्यादीर्घस्यशिरोधरः पितृधनस्त्यागी कविर्वीर्यवान् ।
वक्ता स्थूलदरशवाधरनसः कर्मोद्यतः शिल्पवित् । ।
कुब्जांसः कुनखी समांसलभुजः प्रागल्भ्यवान धर्मविद ।
बन्धुद्विट् न बलात्समेति च वशं साम्नेकसाध्योऽश्वजः । ।
वृहज्जातकम्**

आपकी आखें सुन्दर एवं गोलाकार होंगी तथा कन्धे एवं हाथों की लम्बाई भी सामान्य से अधिक रहेगी। साथ ही आपका वक्षस्थल भी विस्तृत होगा। अवस्था के साथ साथ आपकी कमर में झुकाव आ सकता है। आप जल के समीप घूमना या रहना अत्यन्त ही रुचिकर प्रतीत होगा। अतः ऐसे अवसरों को प्राप्त करने के लिए आप प्रयत्नशील रहेंगे। आप अत्यन्त ही तीव्र बुद्धि के स्वामी होंगे तथा कठिन से कठिन विषय के ज्ञान को प्राप्त करने में सफल रहेंगे। आप मन से हमेशा प्रसन्नता की अनुभूति भी करते रहेंगे। आपके शरीर की हड्डियां भी पुष्ट तथा मजबूत रहेंगी। साथ ही अन्य जनों द्वारा उपकृत होने पर आप उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करना नहीं भूलेगी एवं हृदय से उनका आभार प्रकट करेंगे।

**कुब्जाङ्गो वृतनेत्रः पृथुहृदयकटिः पीनबाहु प्रवक्ता ।
दीर्घासो दीर्घकण्ठो जलतटवसतिः शिल्पविद् गूढगुह्यः । ।
शूरोदृष्टोऽस्थिसारो विततबहुबलः स्थूलकण्ठोऽष्टघोणो । ।
बन्धुस्नेही कृतज्ञो धनुषिशशिधरे संहताग्नि प्रगल्भः । ।
सारावली**

आप प्रायः कोई न कोई कार्य अवश्य करते रहेंगे क्योंकि खाली बैठना आपको अच्छा नहीं लगेगा। आपकी वाक्पटुता से लोग प्रभावित होंगे तथा सभी सम्मान पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। आप एक त्यागी पुरुष होंगे तथा समयानुसार अपनी इस प्रवृत्ति का प्रदर्शन करते रहेंगे। आपका कद भी मध्यम रहेगा तथा प्रवृत्ति साहस से परिपूर्ण रहेगी इसके अतिरिक्त उच्च वर्ग के लोगों में प्रिय तथा आदरणीय भी रहेंगे।

**दीर्घस्यकण्ठः पृथुकर्णनासः कर्मोद्यतः कुब्जतनुनृपेष्टः ।
प्रागल्भ्यवाक्त्यागयुतोऽरिहन्ता साम्नेकसाध्योऽश्विभवो बलाढ्यः । ।
फलदीपिका**

आप विविध प्रकार के कार्यों तथा कलाओं में प्रवीण रहेंगे तथा आपका चरित्र भी उत्तम होगा। आप एक स्पष्ट वक्ता होंगे तथा स्पष्ट एवं सत्य कहने के

ShriSidhesavarii jyottishe kendra

Panjabi colony shamgarh dist mandsaar M. P. 458883

9669569563

ramchranvyass5gmail.com

लिए हमेशा यत्नशील रहेंगे। साथ ही आप अपनी आय को मध्यनजर रखते हुए अत्यन्त ही सोच विचार कर व्यय करेंगे। अतः अनावश्यक आर्थिक संकट से बचे रहेंगे।

**बहुकलाकुशलः प्रबलो महाविमलताकलितः सरलोकितभाक् ।
शशधरे तु धनुर्धरगे नरो धनकरो न करोति बहुव्ययम् ।।
जातकाभरणम्**

आपके शरीर के अंग सुन्दर एवं पुष्ट रहेंगे। साथ ही कुल अथवा परिवार में आप एक श्रेष्ठ पुरुष समझे जाएंगे जिससे समस्त परिवारिक जन आपको सर्वथा स्नेह तथा सम्मान प्रदान करेंगे। इंजीनियरिंग या चित्रकारी के क्षेत्र में आप विशिष्ट सफलता को प्राप्त कर सकेंगे।

**सौम्याङ्गो रुचिरेक्षणः कुलवरः शिल्पी धनुस्थे विधौ ।।
जातक परिजातः**

आप स्वभाव से ही शूरवीर रहेंगे तथा निर्भयता पूर्वक अपने कार्यों को सम्पन्न करेंगे। सत्यानुपालन करना आप अपना परम कर्तव्य समझेंगे तथा इसके लिए आजीवन तत्पर रहेंगे। आपकी बुद्धि स्थिर होगी अतः स्थिर कर्म करने के प्रति आपकी रुचि रहेगी। आप में सत्वगुण विद्यमान रहेगा एवं अन्य जनों के प्रति केवल प्रेम की ही भावना रहेगी। साथ ही आपको पत्नी के रूप में सुन्दर, गुणवती तथा बुद्धिमती स्त्री की प्राप्ति होगी। विभिन्न प्रकार के नाटकों में भी आप दक्ष रहेंगे परन्तु आपका शरीर स्थूलता से युक्त रहेगा। कभी कभी आपके कार्यों के द्वारा सम्पूर्ण परिवार या कुल को परेशानी का सामना भी करना पड़ सकता है। परन्तु समाज में आपकी पूर्ण लोकप्रियता विद्यमान रहेगी।

**शूरः सत्यधियायुक्तः सात्विको जननन्दनः ।
शिल्पविज्ञान सम्पन्नो धनाढ्यो दिव्यभार्यकः ।।
मानसागरी**

आप एक सर्वगुण सम्पन्न व्यक्ति होंगे तथा समाज में पूर्ण आदर के पात्र रहेंगे। अपने अन्य भाईयों में भी आप सर्वरूपेण श्रेष्ठ समझे जाएंगे। आपका देवताओं, ब्राह्मणों एवं गुरुजनों के प्रति अत्यन्त ही श्रद्धा भाव रहेगा जिसका आप समय समय पर प्रदर्शन भी करते रहेंगे। आप अत्यन्त ही दर्शनीय गति से गमन करेंगे परन्तु सहिष्णुता के भाव का आपमें प्रायः अभाव ही दृष्टिगोचर होगा।

**धनुरिवगुणयुक्तः कीर्तिवाक् पूजनीयः ।
कुलपतिरुपचेता बन्धुर्वर्गेक पात्रः ।।
बहुजन धनयुक्तो देवविप्रर्षि सेवी ।
मृदुगतिरसहिष्णुः कार्मुको यस्य राशिः ।।
जातक दीपिका**

राक्षस गण में जन्म होने के कारण आपकी प्रवृत्ति कभी कभी अधिक बोलने

ShriSidhesavarii jyottishe kendra

Panjabi colony shamgarh dist mandaur M. P. 458883

9669569563

ramchranvyass5gmail.com

वाली होगी तथा आपका अर्न्तमन कोमलता के भावों से भी युक्त रहेगा। आप एक साहसी पुरुष होंगे। अतः अपने अधिकांश कार्यों को साहस पूर्वक सम्पन्न करने में सफलता अर्जित करेंगे। कभी कभी आप अकारण ही अपने क्रोध का भी प्रदर्शन करेंगे। आप का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा शारीरिक बल भी पूर्ण रहेगा। आपका अन्य जनों से परस्पर विवाद भी चलता रहेगा फलतः अन्य लोगों का आपसे अधिकांश द्वेष का भी भाव रहेगा।

आप अपने जीवन काल में उन्माद या प्रमेह आदि रोगों से भी व्याकुलता की अनुभूति कर सकते हैं। आपका शारीरिक स्वरूप भी आकर्षक रहेगा तथा परन्तु आप यदा कदा कठोर शब्दों का प्रयोग करेंगे। जिससे अन्य जन आपसे अप्रसन्न रहेंगे। अतः प्रयत्नपूर्वक अपने सम्भाषण में मधुर शब्दों का ही प्रयोग करें।

**अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च ।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी । ।
जातकभरणम्**

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही क्रोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगड़ू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

श्वान योनि में जन्म लेने के कारण आप हमेशा अपने कार्यों को करने में सक्रिय रहेंगे। आप एक उत्साही पुरुष होंगे तथा आपकी कार्य सफलताओं में उत्साह का विशेष योगदान रहेगा। आपकी प्रवृत्ति भी साहसी रहेगी तथा साहस पूर्वक समस्त समस्याओं का प्रतिरोध तथा समाधान करेंगे। बन्धुवर्ग से आपके अच्छे संबंध रहेंगे परन्तु माता पिता के प्रति आपकी निःस्वार्थ श्रद्धा रहेगी तथा तत्पर होकर आप जीवन में उनकी सेवा सुश्रूषा करेंगे।

**सोद्यमः सुमहोत्साही शूरः स्वज्ञाति विग्रही ।
मातृपित्रो सदाभक्तः श्वानयोनौसमुद्भवः । ।
मानसागरी**

अर्थात् श्वान योनि में उत्पन्न जातक उद्यमी, उत्साह से परिपूर्ण, शूरवीर, अपने बन्धुवर्ग से द्वेष रखने वाला तथा माता पिता का भक्त होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति नवम भाव में है। अतः माता के आप प्रिय रहेंगे। आपके शुभ प्रभाव से उनका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। आपकी सुख संसाधनों के प्रति वे चिन्तित रहेंगी तथा प्रयत्न पूर्वक आपको इन सुख संसाधनों का उपभोग करायेंगी। साथ ही आपके भाग्य की उन्नति में भी उनका विशेष योगदान रहेगा। इसके अतिरिक्त उन्हीं की सहायता एवं सहयोग से आप आवश्यक सुखसंसाधनों को भी प्राप्त करेंगे।

आप भी उनके आज्ञाकारी होंगे तथा पूर्ण रूप से उनका हार्दिक सम्मान करेंगे।

ShriSidhesavarii jyottishe kendra

Panjabi colony shamgarh dist mandasaur M. P. 458883

9669569563

ramchranvyass5gmail. com

जीवन में उनको पूर्ण सुख सुविधा प्रदान करने के लिए आप यत्नशील रहेंगे। आपके परस्पर संबंध भी मधुर होंगे तथा यदा कदा ही कोई मतभेद रहेंगे अन्यथा एक दूसरों से सहमत ही रहेंगे। इस प्रकार आप एक दूसरों के लिए सामान्य शुभ रहेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति पंचम भाव में है। अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे एवं उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। साथ ही उनकी आयु भी दीर्घ होगी। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपकी यथाशक्ति सहायता करते रहेंगे। आपकी सन्तति के प्रति भी वे स्नेहशील रहेंगे तथा उनके पालन में अपनी पूर्ण रुचि प्रदर्शित करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं आदर का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा का पालन भी आप करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध भी मधुर रहेंगे लेकिन यदा कदा आपसी मतभेदों में विभिन्नता होने से संबंधों में कटुता भी आएगी परन्तु कुछ समय बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। साथ ही जीवन में आप उनका पूरा ध्यान रखेंगे एवं उनकी आर्थिक तथा अन्य सहायता करने के लिए भी उद्यत रहेंगे एवं उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे।

आपके जन्म समय में मंगल तृतीय भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा यदा कदा वे शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। शक्ति, साहस तथा पराक्रम से वे युक्त रहेंगे। साथ ही जीवन में सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको यथायोग्य सहयोग प्रदान करते रहेंगे। धन धान्य से भी वे युक्त रहेंगे एवं समयानुसार आपकी आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे। साथ ही सुख दुःख में आपकी पूरी सहायता करेंगे।

आपके हृदय में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह की भावना रहेगी एवं सर्वदा विषम परिस्थितियों में भी उनका पूर्ण सहयोग करेंगे। आप के परस्पर संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा मतवैमिन्यता के कारण उनमें कटुता या तनाव भी उत्पन्न होगा परन्तु वह अल्प समय के लिए रहेगा कुछ समय बाद सब कुछ ठीक हो जाएगा। साथ ही आप सुख दुःख में भी उनको अपनी ओर से पूर्ण सहायता प्रदान करेंगे। इस प्रकार आप भाई बहिनों के सुख मध्यम रूप से ही अर्जित कर सकेंगे।

आपके लिए श्रावण मास, तृतीया, अष्टमी, त्रयोदशी तिथियां, भरणी नक्षत्र, वज्रयोग, तैतिलकरण, शुक्रवार प्रथम प्रहर तथा मीन राशिस्थ चन्द्रमा हमेशा अशुभ फल दायक रहेंगे। अतः आप 15 जुलाई से 14 अगस्त के मध्य 3,8,13 तिथियों, भरणी नक्षत्र, वज्रयोग तथा तैतिल करण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, कयविकयादि अन्य शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही शुक्रवार, प्रथम प्रहर तथा मीन राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा एवं स्वास्थ्य के प्रति भी सावधान रहें।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक परेशनी, शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में असफलता प्राप्त हो रही हो तो ऐसे

समय में आपको अपने इष्ट देव हनुमान जी की आराधना करनी चाहिए। साथ ही सोना, पुखराज, पीत वस्त्र, चने की दाल, हल्दी आदि पदार्थों का श्रद्धापूर्वक दान करना चाहिए। इसके अतिरिक्त वृहस्पति के तांत्रिक मंत्र के कम से कम 16000 जप किसी योग्य विद्वान के द्वारा करवाने चाहिए। इससे आपके अशुभ फल नष्ट होंगे तथा लाभमार्ग प्रशस्त होंगे।

ॐ ग्रां ग्रीं ग्रों सः वृस्पतये नमः ।
मंत्र- ॐ ऐं क्लीं वृहस्पतये नमः ।



ShriSidhesavarii jyottishe kendra

Panjabi colony shamgarh dist mandasaur M. P. 458883

9669569563

ramchranvyass5gmail. com